रात्रि क्लास 30/11/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

यह तो बाप और बच्चे जानते हैं। भगवानुवाच है। मैं तो सदैव रहता हूँ शान्तिधाम में, टावर ऑफ सायलेन्स और तुम टावर ऑफ हैपीनेस और टावर ऑफ अनहैपीनेस। यह बाप बताते हैं। फिर मैं आता ही हूँ संगमयुग पर। फिर कब टावर ऑफ सायलेन्स छोड़ता नहीं हूँ। सुख में आवेंगे तो दुःख में भी आना पड़े। दुःख में तुम सदैव पुकारते रहते हो। फिर जब ड्रामा प्लैन अनुसार कल्प पूरा होता है तब आता हूँ। मैं ड्रामा में बँधाएमान हूँ। आना ही पड़ता है। तुम बच्चों को टावर ऑफ अनहैपीनेस से निकाल टावर ऑफ हैपीनेस में ले जाता हूँ। सायलेन्स होम में तो जाना ही है। सतयुग में है हैपीनेस। उनके साथ शान्तिधा(म) है। यहाँ है टावर ऑफ अशान्ति। इसमें अनहैपीनेस है। इन बातों को दुनिया में कोई भी नहीं जानते। तुम ही जानते हो। बच्चे घड़ी-2 भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मैं स्वर्ग हो(म) ज़रूर ले जाऊँगा। यह नॉलेज तो बहुत सहज है। बेहद का झाड़ है। इनको कहा जाता है कल्प वृक्ष। 5000 वर्ष की आयु वाले वृक्ष। बाप भी कहते हैं मैं कल्प-2 के संगमयुग पर आता हूँ। तुमको नई दुनिया के लायक बनाता हूँ। जो मेरे से नहीं मिलते हैं वह नई दुनिया में आते नहीं हैं। शान्तिधाम सभी का घर है। फिर नम्बरवार सतयुग-त्रेता, द्वापर-कलियुग में आते रहेंगे। अभी भी आते रहते हैं। यह सभी बातें भी जानने की दरकार नहीं। बाप कहते हैं यह है ही पुरानी दुनिया। फिर नई दुनिया में जाना है। और कुछ जानने की दरकार नहीं। इसलिये बाप कहते हैं जास्ती क्या सुनावें। मनमनाभव। बाप और वर्सा। बाकी तो डिटेल है। बाप बेहद का है तो हमारा स्वर्ग की बादशाही का हक है। बेहद का बाप है तो ज़रूर ह(म) नई दुनिया के मालिक होने चाहिए; क्योंकि बाप समझाते हैं। 5000 वर्ष की बात है। ल॰ना॰ का राज्य था। लाखों वर्ष की बात तो याद आ न सके। ख्याल में भी आ न सके। बाप कहते हैं 84 के चक्र को याद करो, बस। अभी तुम बच्चों को चलते-फिरते यही रहना है हमको जाना है। जब तक 100% प्योर बन न जायें तब तक जा न सकें। जितना बाप को याद करेंगे उतना ही बैटरी चार्ज होगी। डिसचार्ज होने में कितना समय लगता है? 5000 वर्ष। शुरू से लेकर कला कम होते-होते उतरते आते हैं। भोगियों की लाइफ छोटी, योगियों की लाइफ बड़ी होती है। यह बातें जो बाप समझाते हैं कोई शास्त्रों में नहीं हैं। बाप कहते हैं अलफ-बे, बस। और बातों में नहीं जाओ। बेहद का बाप मिला तो वर्सा ज़रूर स्वर्ग का है। पढ़ाई तो बहुत ही सहज है। सात रोज़ का कोर्स है ही फुल पढ़ाई के लिए। सात रोज़ में भी सर्विसएबुल बन सकते हैं। बड़ी बात नहीं है। बच्चों को अपनी राजधानी स्थापन करने लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए बाप कहते हैं इस मेरे अविनाशी ज्ञान का विनाश कब हो न सके। थोड़ा भी सुना बाप को याद करो, बस। यह भी काफी है। पिछाड़ी में तो बहुत ही आवेंगे। भक्ति का राज्य खलास हो(ना) है। अभी तो जो रीलिजन को ही नहीं मानते; परंतु फिर साधु-संत आदि का कितना साथ देते रहते हैं। तुम कोई भी काम में इन्टरफियर नहीं करते हो। कुछ साधु-संतों का हंगामा, मेला-मलाखड़ा कुछ भी नहीं। यह तो सिर्फ पढ़ाई है। बाप और बच्चों का मेला है। वह मेला समझते हैं बहुतों को मिलना करना। मेले आजकल कितने ढेर लगते हैं। उनसे तो म्युज़ियम अच्छा है। देहली में बड़े-2 मेले होते हैं। उसमें तुम ले सकते हो। इसमें तो आपे ही आते रहेंगे, औरों को भी साथ में ले आवेंगे। दिन-प्रतिदिन जास्ती होता जावेगा। डर, जादू आदि की बात निकलती जावेगी। कितना पुराना डर है। यह भगाते हैं। बहन-भाई बनाते हैं। भाई-बहन तो होना ही पड़े। भाई-2 भी होना पड़े। ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ यहाँ हैं भाई-बहन। बाप समझाते हैं माला का नम्बरवन दाना बनना है, तो जब ऐसे दैवी गुणवान बनेंगे तब ही स्कॉलरशिप पा सकेंगे। कम स्कॉलरशिप नहीं है। विश्व का मालिक बनना होता है। बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं। बाकी क्या चाहिए। अच्छा, मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।